शब्द–ब्रह्म
E- ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

काव्य में ग्रामीण जीवन

श्रीमती रेखा डावर (शोधार्थी)
डॉ.पुरुषोत्तम दुबे (निर्देशक)
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारत की मूल संस्कृति ग्रामीण है। कृषि सभ्यता का जितना विकास भारत ने किया है, उतना अन्य किसी देश ने नहीं। ग्रामीणों का प्रकृति से घनिष्ठ संबंध है। प्रकृति उनके सुख-दुःख में सहभागी है। वह जीवन के साथ से इतनी घुली-मिली है की उसे बिलगाना संभव नहीं है। भारतीय साहित्य में इसे अनेक चित्र मिलते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में हिंदी साहित्य में ग्रामीण जीवन पर विचार किया गया है

भूमिका

साहित्यिक दृष्टि से देखें तो कवि और उनके काव्य किसी दूसरे संसार से नहीं आते। वे भी इसी धरती के हैं। समाज और देश की अवस्था का उनके हृदय पर भी प्रभाव पड़ता है। अंतर इतना ही है कि साधारण मनुष्य उन्हें मूक होकर अनुभव करता है और कवि अपनी काव्य प्रतिभा से उन्हें समाज के सामने अभिव्यक्त कर देता है। साहित्य के द्वारा ही हम अपने राष्ट्र के इतिहास, गौरव गरिमा , संस्कृति और सभ्यता पूर्वजों के अनुभव विचारों और परंपराओं से ही परिचय प्राप्त करते हैं।

भारत एक कृषि प्रधान देष है। इसकी 70 प्रतिशत आबादी कृषि कार्य में संलग्न है। यह ग्रामों में निवास करती है। इसी कारण भारत की समस्त संस्कृति में ग्राम्य जीवन के दर्शन होते हैं। साहित्य समाज का दर्पण होता है , अतः साहित्य में भी ग्राम्य जीवन की झलक देखने को सर्वदा मिलती है। अधिकां श कवि ग्रामीण पृष्ठभूमि से हैं और ग्राम्य जीवन से सीधे जुड़ाव होने के कारण उनकी रचनाओं में ग्राम्य जीवन के सहज बिंब उभरते हैं। ग्रामों के बिंब सुमित्रानंदन पंत की 'ग्राम्या' में स्पष्ट हैं -

वृहद ग्रंथ मानव जीवन का काल ध्वंस से कवलित,
ग्राम आज है पृष्ठ जनों की करुणा कथा जीवित।
मनुष्यत्व के मूल तत्व ग्रामों में ही अंतर्हित
शिक्षा के सत्याभासों से ग्राम नहीं है पीड़ित।।

छायावादी काव्यधारा के प्रमुख कवि सुमित्रानंदन पंत की 'ग्राम्या' का स्थान काव्य में वही है जो उपन्यासों में 'गोदान' का है, परंतु पंत और प्रेमचंद दो भिन्न भागों से चलकर गांवों में पहुंचे हैं। यह तो पंत के साहस और संकल्प का प्रताप है जो उन्हें 'ग्राम्या' में इतनी सफलता मिली। उनके जैसे संस्कारी और रहस्य दर्शी कवि ने जब ग्राम जीवन के यथार्थ पर दृष्टिपात किया था तब ये दोनों संभावनाएं थीं कि या तो कवि के स्वप्न भंग की अनुभूति हो या उसके विचारों का आधार हिल जाय। पर ग्राम्या इन दोनों संभावनाओं से

शब्द–ब्रह्म
E- ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

बच गयी। 'ग्राम्या' में पहली बार हमें अपने भारतीय ग्राम जीवन का आदर्श से प्रेरित यथार्थ मिला जो कवि की पारगामी दृष्टि के मंगल से मण्डित है।

इनके अध्ययन से समाज का वह रूप सामने आता है जो विस्मिति की अनेक परतों में दब गया है। ग्रामीण समाज के विभिन्न प्रकार के चिंतन-मनन, रहन-सहन, आचार-विचार की अभिव्यक्ति हमें साहित्य के माध्यम से ही होती है। इसी के द्वारा हम कवि विशेष के काव्य में ग्रामीण साहित्य की अभिव्यक्ति का परिचय प्राप्त कर सकते हैं।

ग्रामीण जीवन के चित्र

अ किसान

ग्रामीण जीवन का सबसे सर्वसुलभ चित्र कृषक है। त्रिलोचन के काव्य में ग्रामीणों के जीवन के विभिन्न पक्षों का चित्रण है। ये चित्र अलग-अलग होने के बावजूद परस्पर संबद्ध हैं।

त्रिलोचन के अनुसार, "मध्यवर्गीय मानसिकता के कवियों की कविता में किसान बहुत कुछ करता है, लेकिन वह खेती करता नहीं दिखाई देता। "

त्रिलोचन सबसे पहले किसान के रूप में जीवन के लिए प्रकृति से लड़ते हुए किसान के कार्य को चित्रित करते हैं।

है धूप कठिन सिर ऊपर
थम गयी हवा है जैसे,
दोनों दूबों के ऊपर
रख पैर खींचते पानी।"

इससे भिन्न एक चित्र में किसान दूसरा पक्ष है। उपर चित्र में पति के साथ-साथ घाम- शीत हुई जो स्त्री खेत में पानी दे रही है , वह किसी दिन बहू बनकर पति के घर आई होगी। ऐसे अवसर पर किसान के जीवन में और घर में जो उत्सव और उल्लास होता है, उसकी अभिव्यक्ति त्रिलोचन ने की है।

"कांपती सुख से कहीं बैठी अकेली
साधती होगी बहुत कुछ भाव के स्वर
आज मान सा इन सबों गति की पहली कड़ी हो
गा रही है गा रही है गा रही है।"

ब ग्राम युवती

गांव में युवतियों का जीवन श्रम साध्य है। अतः गांवों में अलग ही नारी सौंदर्य का दर्शन होता है, जिसे पंत की ग्राम्या में देखा जा सकता है -

उन्मद यौवन से उभर
घटा-सी नव आसाढ़ की सुंदर,
अति श्याम वरण,
श्लथ, मंद, चरण,
इठलाती आती ग्राम युवती।
वह गजगति
सर्प डगर पर।

स ग्रामीण पर्व

गांवों में ग्रामीण जीवन में पर्वों का विशेष महत्व है। पर्व किसी विशेष जाति समाज के न होकर संपूर्ण गांव के होते हैं। काव्य में इन पर्वों का भी सहज चित्रण उभरता है। जैसे पंत की ग्राम्या में स्पष्ट स्वरूप उभरता है -

जन पर्व मकर संक्रांति आज
उमड़ नहाने को जन समाज
आ रहे चले लो, दल के दल,
गंगा दर्शन को पुण्योज्ज्वल।
लड़के, बच्चे, बूढ़े, जवान,
रोगी, भोगी, छोटे, महान,
क्षेत्रपति, महाजन, ओ' किसान।

3 ग्रामीण जीवन की सार्थकता

ग्रामीण जीवन में केवल स्वयं के लिए न होकर सभी के लिए जीवन की सार्थकता होती है। जिसमें संपूर्ण मानव समाज को कुछ न कुछ देने

शब्द–ब्रह्म
E- ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

की परंपरा-सी है, जो हमारी भारतीय संस्कृति का प्रतीक भी है। गोपाल शरण सिंह हिंदी के पुराने कवि हैं। इनकी रचनाएं ग्रामीण लोक जीवन के मन के भिन्न-भिन्न भावों का चित्रण करने में इनकी पैनी दृष्टि विषेष सतर्क रहती है और वह हमें ऐसी उच्च भावभूमि पर ले जाती हैं, जहां पहुंचकर जीवन के आह्लाद और विषाद का वैषम्य दूर हो जाता है।

जैसे उनकी रचना 'जीवन प्रवाह' और 'ग्राम' में ग्रामीण कृषकों की अंतर्वैयक्तिक दृष्टि की गहरी छाप स्पष्ट रूप से प्रकट होती है।

होकर भी असभ्य तू ही है विश्व सभ्यता का आधार।
स्वावलंबन की समुचित शिक्षा, पाता है, तुझसे संसार।
होता है अंकुरित सर्वदा खेतों में ही तेरा ज्ञान।

श्रीकृष्ण सरल की कविताओं में भी ग्रामीण जीवन के सरल कवि भीलों के जीवन की सार्थकता का वर्णन करते हैं:

खड़ा खेत पर इठलाता है
भील युवक अभिमानी।
भैंस बराबर दिखते इसको
काले-काले अक्षर
नहीं जानता राजनीति के
दांव पेच या चक्कर
खड़ा खेत पर इठलाता है,
भील युवक अभिमानी।

ग्रामीण जीवन की विषमताएं

ग्रामीण जीवन में ग्रामीण जन कठोर मेहनत मजदूरी करते हैं, किंतु फिर भी जीवन की आधारभूत सुविधाओं से वंचित रहते हैं। इन विषमताओं का भी काव्य में सहज उल्लेख मिलता है। भगवतीचरण वर्मा की भैंसागाड़ी में ये व्यथा उल्लिखित है:

"उस ओर क्षितिज के कुछ पांच कोस की दूरी पर,
भू की छाती पर फोड़ों से हैं उठे हुए कुछ कच्चे घर,
मैं कहता हूं खंडहर उसको, पर वे कहते हैं उसे ग्राम,
जिसमें भर देती निज धुंधलापन, असफलता की सुबह शाम,
पशु बनकर नर पिस रहे जहां नारियां बन रही हैं गुलाम,
पैदा होना फिर मर जाना, बस यह लोगों का एक काम"

ऐसे तो गरीबी किसी एक देश की नहीं बल्कि पूरे विश्व की समस्या है। किंतु ग्रामीण गरीबों का अधिकांश भाग सामंती किसान, मजदूरी जनजाति मछुआरों का है। भारत में सन् 1975 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने 'गरीबी हटाओ' का नारा दिया था। उसके बाद से देश में गरीबी पर जोरदार हमला करने के लिए एकीकृत ग्रामीण विकास योजना शुरू की गयी। विज्ञान एवं तकनीकी के उपयुक्त प्रयोग से क्षेत्र विकास की यह पहली शुरुआत थी। तब से आज तक यह ग्रामीण विकास की मूल नीति रही है।

गांव के परिवर्तनहीन जीवन का विषाद से भरा हुआ यह मार्मिक चित्र है। प्रगति शील कविता ने ग्राम्य जीवन के यथार्थ चित्र खींचे हैं, उसे गुप्त जी की तरह गौरवान्वित नहीं किया है। ग्राम्य जीवन की कुत्सा का एक वास्तविक चित्र इस प्रकार है:

"ऐसे ग्राम भरा है जिनमें, आह अगाध अज्ञान भयंकर
मंडराती है जहां भूख की उत्कट ज्वालाएं प्रलयंकर।
ग्राम नही है ये सदियों की आहें पूंजीभूत हुई हैं

मानव की वेदना व्यथाएं , बनकर ग्राम प्रसूत हुई हैं।।"

हमारे आज के परिवे श की जटिलताएं इतनी अधिक हैं कि हम उनसे पलायन कर अपने जीवन में सरलीकरण का मार्ग खोजने लगे हैं। इस कारण हम उस उत्तरदायित्व से चूक जाते हैं जो युग हमारे कंधों पर डालकर आश्वस्त हो जाना चाहता है। यह बात कहने और सुनने में चाहे आज कम अर्थवत्ता रखे किंतु सही अर्थों में वह गंभीर अवश्य है। हमारी भावी पीढ़ी जब जीवन दर्शन मांगती हुई खड़ी होंगी तो इस खालीपन के लिए हमें क्षमा नहीं करेंगी।

युग चिंतन इस दि शा में मौन नहीं है , किंतु वह कुछ सीमाओं से ग्रस्त है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि गंभीर से गंभीर बातों को इतनी सहजता और सरलता से प्रस्तुत किया जाए कि वे उन लोगों के दायित्व और बुद्धि की सीमा में आ जाएं, जिनसे वे संबंधित हैं। हरी श प्रधान की 'गा रही धरती सारी' की रचनाएं इसी क्रम की हैं:

"मेहनत करने वाला किसान
अब भी भूखा सो जाता है।
पीढ़ी दर पीढ़ी का उधार
जब गला दबाये बैठा हो,
सुस्ताने का समय नहीं है, ले हंसिया कुदाल हाथों में।
खेत और खलिहान जगा दो, सारा भारत देश जगा दो।"

निष्कर्ष

भारतीय ग्रामीण साहित्य में काव्य का एक विशिष्ट स्थान है। भारतीय परंपराओं एवं रीति-रिवाजों में काव्य एवं लोकगीतों का प्रयोग प्राचीन समय से ही हो रहा है। ग्रामीण लोगों का प्रकृति एवं इनके द्वारा प्रचलित साहित्य प्राचीन समय में भी काफी समृद्ध था। वर्तमान में भारतीय ग्रामीण समाज की जीवन शैली को समझने के लिए हमारी युवा पीढ़ी को अपनी विषाल संस्कृति ज्ञान राषि का मंथन करना होगा , क्योंकि कवि संसार का एक आदर्ष व्यक्ति समझा जाता है। ग्रामीण कवि कर्म की सफलता के लिए जगत एवं जीवन का व्यापक गहन अध्ययन करना होगा, क्योंकि कवि अपनी काव्य साधना के द्वारा ही प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से विश्व कल्याण के व्यापक रूप को सिद्ध करता है।

संदर्भ ग्रंथ

1 हिन्दी काव्य का इतिहास , रामस्वरूप चतुर्वेदी (लोकभारती प्रकाशन) 2007

2 हिन्दी भाषा एवं समसामयिकी , प्रो.धनंजय वर्मा, मध्यप्रदेष हिन्दी ग्रंथ अकादमी 2001

3 ग्राम्या, सुमित्रानंदन पंत, भारती भण्डार, प्रयाग संवत् 2013 वि.

4 त्रिलोचन के काव्य में ग्रामीण कृषक इंटरनेट द्वारा

5 श्रीकृष्ण सरल , प्रदीप प्रकाषन , गोपाल भवन , माधवनगर, उज्जैन, 1961 प्रथम संस्करण

6 भैंसागाड़ी, भगवतीचरण वर्मा, इंटरनेट द्वारा

7 गा रही धरती सारी , डॉ..हरीश प्रधान , अनुभूति प्रकाषन, उज्जैन, प्रथम संस्करण, 1983

8 हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास , महेंद्र प्रसाद गोयल, राजहंस प्रकाषन, मेरठ